

Om Jai Jagdish Hare Aarti Pdf

ॐ जय जगदीश हरे,स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट,क्षण में दूर करे ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

www.shivaarti.com

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का,
स्वामी दुःख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे, सुख सम्पति घर आवे,
कष्ट मिटे तन का ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी,
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा,तुम बिन और न दूजा,
आस करूं मैं जिसकी ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

www.shivaarti.com

तुम पूरण परमात्मा,तुम अन्तर्यामी,
स्वामी तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर,पारब्रह्म परमेश्वर,
तुम सब के स्वामी ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

तुम करुणा के सागर,तुम पालनकर्ता,
स्वामी तुम पालनकर्ता ।
मैं मूरख फलकामी,मैं सेवक तुम स्वामी,
कृपा करो भर्ता ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे.. ॥

तुम हो एक अगोचर,सबके प्राणपति,
स्वामी सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय,किस विधि मिलूं दयामय,
तुमको मैं कुमति ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

www.shivaarti.com

दीन-बन्धु दुःख-हर्ता,ठाकुर तुम मेरे,
स्वामी रक्षक तुम मेरे ।
अपने हाथ उठाओ,अपने शरण लगाओ,
द्वार पड़ा तेरे ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

विषय-विकार मिटाओ,पाप हरो देवा,
स्वामी पाप(कष्ट) हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ,
सन्तन की सेवा ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तन-मन-धन और संपत्ति, सब कुछ है तेरा,
स्वामी सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण, तेरा तुझको अर्पण
क्या लागे मेरा ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

www.shivaarti.com

जगदीश्वरजी की आरती जो कोई नर गावे,
स्वामी जो कोई नर गावे
कहत शिवानंद स्वामी, कहत शिवानंद स्वामी
मनवांछित फल पावे ॥
॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

ॐ जय जगदीश हरे,स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट,क्षण में दूर करे ॥